



आपने जंगल के बारे में सुना होगा। प्रायः आपने टी0वी0 में भी जंगल के दृश्य देखे होंगे। आपने देखा होगा तरह-तरह के फल-फूल, कई तरह के छोटे-बड़े पेड़-पौधे, रंग बिरंगी चहचहाती चिड़ियाँ और बहुत से जानवर। जंगल में दूर-दूर तक हरियाली रहती है। जंगल में पक्षियों की चहचहाहट और विभिन्न जानवरों की बोलियाँ भी सुनाई देती रहती हैं।



ऐसे ही सुंदर जंगलों से ढके हैं हमारे देश के कई हिस्से।



चर्चा करिए—

- कहीं बहुत सारे पेड़ उगाए गए हों तो क्या वह जंगल बन जाता है ?
- जंगल हमारे लिए क्यों महत्त्वपूर्ण हैं ?
- इन जंगलों से हमें क्या मिलता है ?

जंगल तरह-तरह के पेड़-पौधों व पशु-पक्षियों का वास स्थान होते हैं। इनका मनुष्य के जीवन में अत्यन्त महत्त्व है। ये वायुमण्डल में ऑक्सीजन गैस की मात्रा को बढ़ाते हैं और विषैली गैसों की मात्रा को कम करते हैं। ये मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। वर्षा कराने में भी इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

जंगल से उपयोगी इमारती लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं। हमारे देश में लगभग 4000 से

अधिक किस्मों की लकड़ियाँ वनों से प्राप्त होती हैं। इनमें सागौन, शीशम, देवदार, चीड़ आदि इमारती लकड़ियाँ महत्वपूर्ण हैं, जिन पर हमारा प्लाईवुड उद्योग, काष्ठ उद्योग, इमारती लकड़ी उद्योग आदि निर्भर है। बाँस के पेड़ों से चटाई, डलिया, हाथ वाला पंखा, बांसुरी बनाई जाती है। इनसे कागज, दियासलाई, कत्था, रेशम, रबर, लाख, बीड़ी, पत्तल, औषधि आदि उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है। पलाश व कुसुम के पौधों पर लाख के कीटों एवं शहतूत के पौधों पर रेशम के कीटों का पालन किया जाता है।

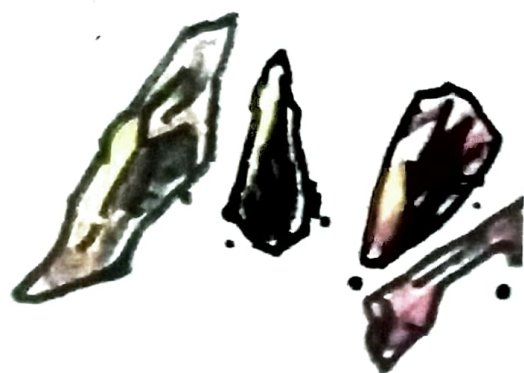


पता कीजिए—

- हमें जंगलों से और क्या-क्या चीजें मिलती हैं ?
- पशु-पक्षियों के अलावा जंगल में और कौन रहता है ?

प्रारम्भिक मानव जीवन

मानव सभ्यता के विकास की कहानी लाखों वर्ष पुरानी है। सभ्यता के आरम्भ में मानव जंगलों में रहता था। मानव आदिकाल से ही जंगलों पर निर्भर था। पहले मानव बंदरों की भाँति चार पैरों पर चलता था। धीरे-धीरे उसका विकास हुआ और वह दो पैर पर सीधा खड़ा चलने लगा। अगले पैरों का प्रयोग हाथ के रूप में करने लगा। मस्तिष्क और हाथ का उपयोग वह तरह-तरह के कार्यों में करने लगा।



आज की भाँति प्रारंभ में मानव के पास रहने के लिए घर नहीं थे। वे एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे। वे खुले आकाश के नीचे, जंगलों में, नदियों व झील के किनारे, गुफाओं में रहते थे। जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा तथा उनका शिकार करने के लिए उनके पास केवल पत्थर के ही औजार थे।



कन्दमूल फल तथा शिकार से प्राप्त मांस ही उनका मुख्य भोजन था। जानवरों की खाल, पेड़ों की छाल एवं पत्तों को वस्त्र की तरह पहनते थे। इस तरह जीवन व्यतीत करने वाले मानव आदिमानव कहलाए।

कैसे मिली आग —

एक बार बहुत तेज आँधी आई। कुछ पेड़ों की डालियों के आपस में रगड़ने से चिंगारियाँ निकलने लगीं। ये चिंगारियाँ जब सूखे पत्तों और घास पर पड़ीं तो आग लग गई। आग लगने से बहुत सारे जानवर भाग गए। जो नहीं भाग पाए वे जल गए। आदिमानव ने उनके मांस को खा कर देखा। उन्हें भुना मांस अच्छा लगा।

इसी तरह एक बार जब पत्थर से पत्थर टंकराया तो उसमें से भी चिंगारी निकली। वे खुशी से झूम उठे अहा! मिल गई आग

आग की खोज प्रारम्भिक मानव की एक बड़ी उपलब्धि थी। इसकी खोज के साथ ही मानव भोजन को पकाकर खाने लगा। आग का उपयोग उसने अपने शरीर को गर्म रखने और जंगली जानवरों से रक्षा करने के लिए किया।



सोचिए और लिखिए—

- आग का उपयोग करने के पहले मानव का जीवन कैसा रहा होगा?
- आग का ज्ञान होने के बाद मानव जीवन में क्या परिवर्तन आया होगा ?
- यदि आग नहीं होती तो हमें क्या-क्या दिक्कतें/परेशानियाँ होती ?
- आग का उपयोग हम कहाँ-कहाँ करते हैं ?

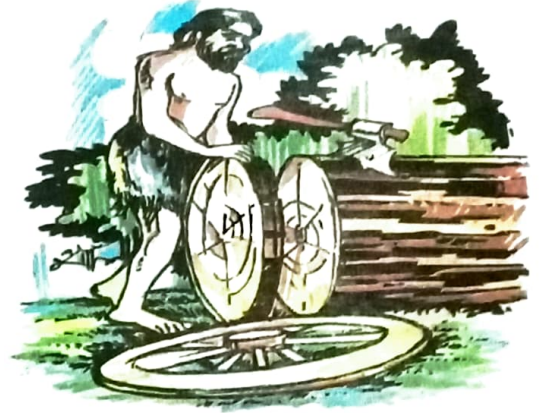
धीरे-धीरे मानव अपने चारों ओर के वातावरण को समझने लगा। उसने पत्थर के छोटे और सुडौल औजार बनाने शुरू किए। पत्थर के अतिरिक्त जानवरों की हड्डियों एवं सींग से भी औजार बनाए। उसने अपने आप उगी घास और अनाज को एकत्र करना शुरू कर दिया। इधर-उधर

इसे भी जानें—

- कुत्ता मानव का प्रथम पालतू पशु था।
- ताँबा, सर्वप्रथम खोजी गई धातु थी।

बिखरे अनाज से पुनः अनाज उगता देख उसने खेती करना सीख लिया। खेती करने के लिए उन्हें अलग तरह के औजार बनाने पड़े। इन औजारों को टिकाऊ बनाने की जरूरत महसूस हुई, क्योंकि पत्थर के औजार जल्दी टूट जाते थे। अपने औजारों को टिकाऊ बनाने के लिए उन्होंने बहुत उपाय किए और जमीन की खुदाई कर ताँबे को खोज निकाला। खेती के साथ पशुपालन भी प्रारंभ हुआ। पशुओं का प्रयोग मांस व दूध प्राप्त करने में किया जाता था।

ताँबे के औजारों से काम काफी आसान हो गया। बाद में जब लोहे का पता चला, तब उससे भी औजार बनाए गए। ये औजार ताँबे के औजारों से अधिक मजबूत होते थे। इन धातुओं की खोज के साथ कुल्हाड़ी और हँसिया उनके प्रमुख औजार हो गए थे।



पहाड़ों से लुढ़कते हुए लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठों को देखकर उन्हें पहिए का विचार आया। लट्ठों को काटकर उन्होंने पहिए का आविष्कार किया। इसका प्रयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में तथा सामान ढोने में किया जाने लगा।



सोचिए और लिखिए—

- कुल्हाड़ी और हँसिया से क्या-क्या किया जा सकता है?
- पहिए का उपयोग प्रारंभिक मानव ने किन-किन कार्यों के लिए किया होगा?
- आपने अपने आसपास पहिए का उपयोग होते कहाँ-कहाँ देखा है?

जंगल और आदिवासी

क्या आपको पता है कि आज भी हमारी जनसंख्या का एक छोटा हिस्सा जंगलों में निवास करता है। इन्हें हम आदिवासी कहते हैं। ये हमारे देश के विभिन्न राज्यों में पाए जाने वाले जंगलों में निवास करते हैं। आदिवासियों का जीवन पूरी तरह जंगल पर निर्भर होता है।



अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति ये जंगल से मिलने वाले विभिन्न उत्पादों के द्वारा करते हैं। जंगल से प्राप्त कच्चे पदार्थों से ये डलिया, चटाई, ढोल, बांसुरी, टोकरी, पत्तल, बर्तन, जड़ी-बूटी से औषधि (दवा) आदि बनाकर स्थानीय बाजार में बेचते हैं और अपना जीविकोपार्जन करते हैं। ये जंगल के रखवाले होते हैं। ये जंगल को काटते नहीं हैं, जितनी जरूरत होती है उतना ही जंगल से लेते हैं। आदिवासियों की जिंदगी जंगलों से ही जुड़ी होती है। अगर जंगल नहीं बचेंगे तो ये भी नहीं बचेंगे।

इसे भी जानें

जंगल अधिकार कानून 2007 —यह कानून आदिवासियों को जंगल पर उनका हक दिलाता है। इसके अनुसार जो लोग कम से कम 25 साल से जंगल में रहे हैं, उनका वहाँ के जंगल और वहाँ पैदा होने वाली चीजों पर हक है। उन्हें जंगल से हटाया नहीं जाएगा। जंगल बचाने का काम भी उनकी ग्राम सभा करेगी।



चर्चा करिए—

अगर जंगल नहीं बचेंगे तो आदिवासी नही बचेंगे ऐसा क्यों ? यदि ये जंगल नष्ट हो जाएँ तो हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

आदिवासियों के लिए जंगल ही सब कुछ है। विकास के लिए बहुत सी योजनाएँ चलाई जाती हैं। कहीं बाँध बनाए जाते हैं तो कहीं फैक्टरी। इन योजनाओं के कारण जंगल काटे जाते हैं। जंगल के कटने से आदिवासियों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वे अपने घर, संस्कृति, कला, परम्परा आदि से दूर हो जाते हैं। आदिवासी ही नहीं बल्कि गाँवों, कस्बों और शहरों में रहने वाले लोगों का जीवन भी जंगलों के कटने से प्रभावित हो रहा है। हमें पर्याप्त मात्रा में शुद्ध हवा नहीं मिल पा रही है। वर्षा में कमी के कारण फसलों का उत्पादन प्रभावित हुआ है।



पता कीजिए—

- क्या आपके आस-पास कोई ऐसा काम चल रहा है जिसके कारण वहाँ के पेड़ काटे जा रहे हैं?

- इसकी वजह से वहाँ के वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
- पेड़-पौधों की संख्या बढ़ाने के लिए हम क्या प्रयास कर सकते हैं ?

हमारे देश में पहले लोग जंगल और बाग बगीचों से प्यार करते थे। किसान अपनी खेती के आधे भाग में पेड़ जरूर लगाते थे। पर अब लोग पेड़ लगाना भूलते जा रहे हैं। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए। यदि विकास कार्यों के लिए किसी स्थान विशेष से वृक्ष काटे जाए तो विकल्प के रूप में अन्य स्थानों को चयनित कर उनमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

वनो का बचाव —

सरकार ने वनों की रक्षा के लिए सामाजिक वानिकी नाम की योजना शुरू की है। उसने कानून बनाकर वनों की कटाई पर रोक लगा दी है।

पहाड़ी इलाकों में लोगों ने चिपको आन्दोलन चलाकर पेड़ों की कटाई रोकने की कोशिश की है। इस आन्दोलन की शुरुआत श्री सुन्दर लाल बहुगुणा जी ने की थी। इस आन्दोलन में लोगों ने पेड़ों से चिपककर उनको काटने का विरोध किया। चिपको आन्दोलन का एक नारा है—“लकड़ी, पानी और बयार, ये हैं जंगल के उपकार।”

वनो को बचाने के लिए श्री के०एम० मुंशी द्वारा सन् 1950 में वन महोत्सव की शुरुआत की गई। इस महोत्सव में पेड़ लगाने का कार्य किया जाता है।

पहाड़ी इलाके गढ़वाल में लड़के-लड़कियों की शादी के अवसर पर पेड़ लगाने की प्रथा शुरू की गई है। इसे ‘मैती आन्दोलन’ कहते हैं। इसमें विवाह के बाद ससुराल आने पर लड़की मायके की याद में एक पौधा लगाती है और उसकी देखभाल करती है। इसे मैती वृक्ष कहते हैं।



1. दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए –
(ऑक्सीजन, लाखों, पत्थर, जंगल, आदिमानव)
(क) प्रारम्भिक मानव के औजार बनाते थे।
(ख) जंगल वायुमण्डल में की मात्रा को बढ़ाते हैं।
(ग) मानव विकास की कहानी वर्ष पुरानी है।
(घ) आदिवासियों का जीवन पर निर्भर होता है।
(ङ) आग की खोज ने की थी।
2. जंगल कटने से होने वाले दुष्परिणाम लिखिए।
3. तुलना करें –

जीवन शैली	आदिमानव	आज का मानव
(क) रहने का स्थान (निवास)		
(ख) खान-पान (भोजन)		
(ग) रहन-सहन (वस्त्र)		

4. चिपको आन्दोलन क्या था? इसे किसने प्रारम्भ किया।
5. आदिवासी अपना जीविकोपार्जन कैसे करते हैं?
6. पता करें –

मिट्टी के बर्तन बनाने में आग और पहिये की उपयोगिता।

7. चर्चा करें –

अगर हम खेती करना नहीं जानते तो भोजन कहाँ से प्राप्त करते और क्या खाते ?



प्रोजेक्ट वर्क

भारत के मानचित्र में, विभिन्न राज्यों में पाए जाने वाले जंगल को हरे रंग से भर कर दर्शाएँ और कक्षा में इसे चिपकाएँ।